मधुवन ओम् शान्ति अंक 260 मार्च 2014

पत्र–पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(8-02-14)

विश्व कल्याणकारी, सर्व के गति सद्गति दाता शिव भोलानाथ बाप के अति स्नेही सिकीलधे, अव्यक्त-बापदादा के लाडले, सदा खुशमिजाज़ रह सन्तुष्टता का वायुमण्डल फैलाने वाले निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ आज त्रिमूर्ति शिवजयन्ती की कोटि-कोटि बधाईयां स्वीकार हों।

मीठा बाबा कहे बच्चे, यह शिव जयन्ती ही तुम्हारा सबसे बड़े से बड़ा त्योहार है, इसे खूब धूमधाम से मनाओ। तो सभी बाबा के बच्चे हर वर्ष शिव अवतरण का सन्देश देने निमित्त बहुत सुन्दर-सुन्दर कार्यक्रम हर स्थान पर करते हैं। चारों ओर सेवाओं की धूम होती है। लेकिन अभी बार-बार मेरे अन्दर से आता कि बाबा अब कुछ नवीनता होनी चाहिए। इस वर्ष ऐसा कोई नया प्लैन प्रोग्राम बनें जो चारों ओर सभी को उस ज्योतिर्बिन्दु बाबा का साक्षात्कार हो जाए, लेकिन इसके लिए पहले हम सबको साक्षात उसी स्वरूप में रहना होगा। जैसे इस बार मीठे अव्यक्त बापदादा ने अनेक बार अचानक का पाठ पढ़ाया है, ऐसे अब अचानक जयजयकार का नारा लगने लगे। प्रभु आप आ गये, मिल गये, अहो मेरा भाग्य! ऐसे हर एक की मनोकामना पूरी हो।

तो आओ अभी से हम सभी अपने संकल्प, बोल की एकॉनामी करके, एकनामी, एकाग्रता और एकमत संगठन के आधार पर पहले अपने दिलों में बाबा की प्रत्यक्षता का झण्डा फहरायें फिर विश्व के कोने-कोने में पावरफुल मन्सा शक्तियों की सकाश के साथ, खुशी, शक्ति और सन्तुष्टता की लहर फैलायें। बाबा ने तो हम सबको यही इशारा दिया है कि बच्चे अब कोई भी छोटी बड़ी एरिया सन्देश से वंचित न रहे, ऐसा कोई उल्हना न देवे कि आपने हमें बताया भी नहीं। तो सभी ने बाबा के इन इशारों को कैच करके सेवा के प्रोग्राम्स तो बनाये होंगे। लेकिन जैसे हम सबने साकार बाबा को सदा लाइट लाइट देखा, कितनी भी सेवायें हों, कितनी भी जिम्मेवारियां हों, बाबा सदा एक की लगन में मगन, डबल लाइट स्थिति में रहे। अब हम सबसे भी हर एक को लाइट लाइट का अनुभव हो। हमें कोई चमत्कार नहीं करना है पर चमकता हुआ स्टार जरूर बनना है। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा के साथ हम लक्की स्टार्स आसमान से भी पार बाबा के साथ रहते हैं, ऐसी भासना हर एक को मिले। जब भी जिसको भी कोई देखे तो चमकता हुआ स्टार ही दिखाई पड़े। ठण्डी गर्मी, धूप-छांव, रात-दिन से पार लाइट लाइट...।

बोलो, सदा यही लक्ष्य रख अपने प्यारे बाबुल की जयन्ती सो ब्रह्मा बाप की और ब्राह्मणों की जयन्ती, सो नई सतयुगी दुनिया की **78 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती** ऐसे नवीनता सम्पन्न मनायेंगे ना! तो सदा खुश रहना और खुशियां बांटना। सदा डबल लाइट रहना और डबल लाइट बनाना। सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनाना।

बाकी मधुबन में तो बापदादा की प्यार भरी अव्यक्त पालना का साकार अनुभव करने सभी अपने-अपने ग्रुप में आते रहते हैं। बाबा भी छोटी-सी मुलाकात में सभी बच्चों को खूब भरपूर कर देते हैं। बाबा कितना नि:स्वार्थ स्नेह बच्चों पर लुटा रहे हैं, यह आत्मा परमात्मा के स्नेही मिलन का अनुभव तो हम पद्मापद्म भाग्यशाली ही अनुभव करते वाह बाबा वाह! वाह भाग्य वाह! वाह ड्रामा वाह! के गीत गाते सदा मौजों का अनुभव करते रहते हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

स्नेह का सबूत - फॉलो फादर करो

1) जैसे बाप ने हर संकल्प हर कर्म बच्चों प्रति वा विश्व की आत्माओं प्रति लगाया वैसे ही फालो फादर करो। बाप समान बनने के लिए मन के विघ्नों से युद्ध करने में समय नहीं देना, इसे आवश्यक नहीं, व्यर्थ कहेंगे। जो अपने प्रति ही समय लगाते हैं वे विश्व महाराजन कैसे बनेंगे? विश्व महाराजन बनने के लिए विश्व कल्याणकारी बनो।

2) जैसे बाप में ज्ञान, शक्ति, गुण सभी हैं.. ऐसे फालो फादर करो। आपके स्टॉक में भी सर्वशक्तियां चाहिए। ऐसे नहीं समाने की शक्ति है, सहन शक्ति नहीं तो हर्जा नहीं। लेकिन फाइनल पेपर में क्वेश्चन वही आयेगा जिस शक्ति की कमी है। ऐसे कभी नहीं सोचना छः नहीं दो तो हैं, धारणा नहीं है, सर्विस तो है। सर्विस नहीं है, योग तो है..। लेकिन सब चाहिए तब पास हो सकेंगे।

3) प्युरिटी की पर्सनाल्टी के आधार पर ब्रह्मा बाप आदि देव वा पहला प्रिन्स बनें। ऐसे आप भी फालो फादर कर वन नम्बर की पर्सनाल्टी की लिस्ट में आ जाओ क्योंकि ब्राह्मण जन्म के संस्कार ही पवित्र हैं। आपकी श्रेष्ठता वा महानता ही पवित्रता है।

4) ब्रह्मा बाप इतनी बड़ी जवाबदारी सम्भालते हुए सदा निमित्त समझकर चले, इसलिए जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट रहे, ऐसे फालो फादर। जिम्मेवार बापदादा है आप निमित्त हैं, निमित्त समझकर चलने से आप भी डबल लाइट हो जायेंगे। फिर हर कर्म अति श्रेष्ठ होगा। श्रेष्ठ कर्म की प्रालब्ध आटोमेटिकली श्रेष्ठ होगी। बाप को कापी करो तो बाप समान बन जायेंगे।

5) जैसे ब्रह्मा बाप ने सारे ज्ञान का सार स्वयं में धारण कर बच्चों को फालो फादर करने की हिम्मत दी, साकार रूप द्वारा अन्तिम महावाक्य (निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी की) अमूल्य सौगात दी, उस सौगात को ब्रह्मा बाप ने स्वरूप में लाया और इन्हीं तीन बोल से कर्मातीत अवस्था को पाया तो फालो फादर करो।

6) साकार बाप ने स्थिति का स्तम्भ बनकर दिखाया, जिसके स्नेह में यह शान्ति स्तम्भ, स्मृति स्तम्भ बनाया है – ऐसे ही ततत्वम् – सर्वगुणों के स्तम्भ बनो। जो विश्व के हर धर्म वाली आत्मायें धारणा स्वरूप स्तम्भ आपको मानें, विश्व के आगे आदि पिता के समान शक्ति और शान्ति स्तम्भ बनकर दिखाओ।

7) स्नेह का रेसपान्ड है फालो फादर। जिससे स्नेह होता है उसको आटोमेटिकली फालो करना होता है। सदा याद रहे कि यह कर्म जो कर रहे हैं यह फालो फादर है? अगर नहीं तो स्टॉप। फालो फादर है तो करते चलो, बाप को कापी करते बाप समान बन जाओ। कापी करने के लिए जैसे कार्बन पेपर डालते हैं वैसे अटेन्शन का पेपर डालो तो कापी हो जायेगा।

8) साकार सृष्टि पर पार्ट बजाते आदिकाल से बापदादा ने पहले बच्चों को रिगार्ड दिया। बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुआ। पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज बनें। बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं। ऐसे ही फालो फादर करने वाले बच्चे आदिकाल से रिगार्ड देने का रिकार्ड बहुत अच्छा रखते हैं।

9) बाप की सब बच्चों को सदाकाल के लिए ऑफर है कि बच्चे सदा तख्तनशीन रहो। लेकिन आटोमेटिक कर्म की गति के चक्र प्रमाण सदाकाल वही बैठ सकता है जो सदा फालो फादर करता है। संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हैं।

10) ब्रह्मा बाप जो इतनी बड़ी फर्स्ट अथॉरिटी है उसने भी छोटे-छोटे बच्चों को सुना, अज्ञानियों से भी सुना, इनसल्ट सहन की। ब्रह्मा बाप की भी इनसल्ट करते थे तो आप कौन हो! जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया तो फालो फादर। सिर्फ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा।

11) हर बात में ''छोड़ो तो छूटो'', यही पाठ ब्रह्मा बाप को नम्बरवन ले गया। शुरू से छोड़ा तो छूट गया। यह नहीं सोचा कि साथी मुझे छोड़ें तो छूटूं, सम्बन्धी छोड़ें तो छूटूं। विघ्न डालने वाले विघ्न डालने से छोड़ें तो छूटूं। भिन्न-भिन्न परिस्थितियां मुझे छोड़ें तो छुटूं, यह कभी नहीं सोचा। सदा यही पक्का पाठ प्रैक्टिकल में दिखाया वैसे फालो फादर करो। इसको कहा जाता है-जो ओटे सो अर्जुन।

12) संगठन में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हुए भी जो सदा सी फादर करने वाले हैं वे बापदादा के समीप हैं। और जो सी फादर के साथ ''सी सिस्टर ब्रदर'' कर देते वह समीप के

बजाए दूर हो जाते हैं। फालो फादर करने वाले कभी किसी भी परिस्थिति में डगमग नहीं होंगे क्योंकि फादर कभी डगमग नहीं होता। तो सी फादर करने वाले अचल, अडोल, एकरस रहेंगे।

13) जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर। जितना नम्रचित होंगे उतना निर्माण करेंगे। अगर जरा भी सेवा में रोब आता है तो वह सेवा समाप्त हो जाती है। फ्लोलेस बनना है तो कोई भी बात में फेल नहीं होना, इसके लिये साकार रूप में जो करके दिखाया है वही फालो करो। कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म करने के पहले चेक करो क्या यह ब्रह्मा बाप ने किया? इससे जो भी कोई ऐसे कार्य होंगे, उसमें ब्रेक आ जायेगी।

14) सब अर्जियों को खत्म करने का सहज साधन है - सदा बाप की मर्जी पर चलो। बाप की मर्जी क्या है? हरेक आत्मा सदा शुभचिंतन करने वाली, सर्व के प्रति सदा शुभचिंतक रहने वाली स्व कल्याणी और विश्व कल्याणी बनें। इसी मर्जी को सदा स्मृति में रखते हुए बिना मेहनत के चलते चलो। ब्रदर सिस्टर को रिगार्ड दो लेकिन फालो नहीं करो। विशेषता और गुण को स्वीकार करो लेकिन फुटस्टेप बाप के फुटस्टेप पर हो।

15) जैसे ब्रह्मा बाप ने सांप के समान पुरानी खाल छोड़ दी। कुछ घड़ियों का ही खेल हुआ ना। ऐसे बाप समान व्यक्त भाव को छोड़ नष्टोमोहा स्मृति स्वरुप बनो। यह संकल्प भी नहीं उठा कि मैं जा रहा हूँ, क्या हो रहा है! बच्चे सामने हैं लेकिन देखते भी नहीं देखा। सिर्फ लाइट माइट, समानता की दृष्टि देते उड़ता पंछी उड़ गया। देखने वाले देखते रहे और उड़ने वाला उड़ गया। ऐसे ही फालो फादर करो।

16) जैसे बाप सबका है, कोई भी नहीं कहेगा कि यह फलाने का बाप है, फलाने का नहीं, सब कहेंगे मेरा बाबा। ऐसे जो निमित्त सेवाधारी हैं उन्हों की विशेषता यही हो जो हरेक महसूस करे, अनुभव करे कि यह हमारे हैं। इसको ही कहा जाता है फालो फादर। सबको हमारे-पन की फीलिंग आये। यह मेरा है, बेहद का भाई है या बहन है.. यही सबके मन से शुभ आशीर्वाद निकले। बेहद की भावना, बेहद की श्रेष्ठ कामना - यह है फालो फादर।

शिवबाबा याद है ? 3-1-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"जितना रुहानियत में रहेंगे, हल्के और सरल होंगे उतना सेवा में सहयोगी बनेंगे" (दादी जानकी)

आप सब मिल करके अच्छी तरह से जोर से बोलो ओम् शान्ति। ऐसा ओम शान्ति बोलो जो आगे और कुछ बोलने का ख्याल आवे ही नहीं। अगर आयेगा भी तो वही आयेगा जो बाबा कहता है। हर एक व्यक्तिगत जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे, किसी को कोई रोकने वाला नहीं है।

इस तपस्या मास में मैं याद में ऐसे रहूँ जो और कोई बात याद न आये, बेफिक्र बादशाह। कुछ भी हो जाये, सब अच्छा है। हमारी भावना अनुसार दृष्टि, वृत्ति होती है। मेरी आपके प्रति भावना है तो सभी को प्यारा लगता है, प्यार मांगने से नहीं मिलता है, प्यार देने से मिलता है, यह भी कोई सूक्ष्म हिसाब-किताब है।

हम जितना रूहानियत में रहेंगे, हल्के होंगे, जितना सरल रहेंगे, उतना सेवा में सहयोगी बनेंगे। अन्दर से अपने पुरुषार्थ की पर्सनैलिटी में रीयल्टी और रॉयल्टी ऐसी हो जैसा हमारे बाबा की। बाबा से हर सम्बन्ध की अलग प्राप्ति है। वही बाप, शिक्षक, वही सतगुरू... वन्डरफुल है, एक मिनट में यह अनुभव करो तो और भी मेरे से यह अनुभव करेंगे। अगर मेरे को ही यह अनुभव नहीं है तो भले मैं कितना भी किसी को ज्ञान देंगी लेकिन अनुभव नहीं होगा इसलिए कुछ ऐसा खाओ और खिलाओ जो किसी को ताकत आवे, महसूस हो, कोई कमजोरी जैसे निकल न आवे। है कमजोरी, पर उस पर पूरा ध्यान नहीं दिया है तो समय पर बाहर निकल आती है। फिर नुकसान बहुत होता है। इसलिए अपने ऊपर पहले ध्यान रखो, सेवा लगन से करो, सच्ची दिल से करो पर अनुभव से करो। जैसे बाबा अभी अभी माँ है, अभी अभी बाप है, अभी अभी शिक्षक है, अभी अभी सतगुरू है।

पुरुषार्थ में बाबा के साथ हर सम्बन्ध में सुख अति मिलता है, बाबा तेरा बनने से सुख मिलता इलाही है... पर हर सम्बन्ध में सुख के साथ शक्ति बहुत मिलती है। जैसे बाबा ने कहा सहनशक्ति के साथ सब शक्तियाँ काम करती है। अगर एक

भी शक्ति कम है तो भोलानाथ का बच्चा है, पर भोला है, समझदार नहीं है। तो अभी अपने आप में देखना है, याद माना स्वयं को चेक करना, देखना है - सुख इलाही मिला है? सुख का अनुभव है? अगर जरा भी बाबा से सम्बन्ध में कमी है, तो वह कोई के अधीन बनता है या बनाता है, यह गहरी बात है। अधीन नहीं बनना है, एक बल एक भरोसा, एक तेरा सहारा.... दुनिया में रहते हुए, सब सम्बन्ध में रहते हुए, इन्सान का सहारा नहीं पकड़ना है। परन्तु कोई भी बिल्डिंग पिल्लर के बिना नहीं बनती है, हम कहें ऐसे ही छत पड़ जावे, यह दीवारें बन जावें, तो नहीं बनेगा, थोड़ा समय के लिए पिल्लर लगाने पड़ते हैं। हाँ, एक बार छत पड़ गई, दीवारें बना ली तो फिर उस पिल्लर को निकाल दिया। सिर्फ इतना सहारा (सहयोग) देना है, निमित्त किसी को सहयोग देना या लेना यह भी अक्ल चाहिए। योगी सो सहयोगी हो जाते हैं इसका मतलब उसको कोई अधीन नहीं बना रहे हैं, पर भावना है जो बाबा के बच्चे हैं, इतने शानदार बन जायें जो फरिश्तों की महफिल लग जावे। पहले परवाने थे, शमा पर फिदा हुए, परन्तु दुनिया बाबा के ऊपर फिदा कैसे होगी? जब देखेंगे हम भी इन्सान हैं, यह भी इन्सान है पर यह इन्सान नहीं है पर इन्सान की जो वैल्यू है, उस वैल्युज़ को देखने लग पड़ते हैं, तभी इन वैल्युज़ को देख करके ही इतनी सेवायें हुई हैं। बाबा उनके दिल से पीछे निकला है परन्तु बाबा ने जो वैल्युज़ सिखाई हैं, ईश्वरीय स्नेह में रहने की और देने की, उनसे सबको प्राप्ति हुई है। फिर उसमें बीच में कोई गड़बड़ वाली बात हुई है, तो बाबा जो दे रहा है, परिवार दे रहा है उसका कदर नहीं है। तो सहयोगी बनने बनाने की भावना चाहिए, जिसमें जरा भी बॉडी-कॉन्सेस की अंश न हो, तब ईश्वरीय सन्तान का नशा रहेगा। कोई घड़ी ऐसी न आये जो मैं अपसेट हो जाऊं या मेरे से कोई अपसेट हो जाये। इसके लिए बाबा ने कहा स्वमान की सीट पर सदा सेट रहने का बहुत अच्छा अभ्यास हो, जो इस अनुभव से उन आत्माओं को खैंच होगी। बाबा के साथ सम्बन्ध रखने की, जो मेरे साथ रहे उनके दिल से ओम् शान्ति और बाबा निकले, तो इसी से सुख मिलता इलाही है। बापदादा बच्चों को जो जरुरत है वो देते हैं, बाकी हमारा काम है जैसा देते हैं वैसा करके दिखाना है यानि प्रैक्टिकल लाइफ में आना है। जब प्रैक्टिकल लाइफ में अमल में लाते हैं तो भगवान को हमको देख खुशी होती है। बाबा की उम्मीदों ने भी हमारी बहुत उन्नति की है, बहुत आगे बढ़ाया है। जैसे अभी सबको यह आता है कि बाबा ने अभी यह बात अच्छी बताई, अकेला भी सोचेंगे तो लगता है कि हाँ, यह बात इस समय जरुरी है। जो भी कुछ कमी है वो अब न रहे, तो बाबा की बहुत ही प्यार भरी दुआयें मिलती हैं।

इस अलौकिक जन्म में जो पाया है, कल्प-कल्प हमारा हक लगता है पाने का, अभी आप सभी भी ऐसे खुशी में नाचो, जो बाबा ने सिखाया है उसकी वैल्यु है, प्रैक्टिकल लाने के लिए मेरा फर्ज है। बच्चा वो जो सुपात्र बनें। जैसे बाप चलाये वैसे बच्चे चलें, इसमें कोई मनमत नहीं। तो भगवान हमें ऐसा चलाना सिखाता है जो पहले वाली चलायमानी हमारे में थी वो खत्म हो गई, अभी जो भगवान ने सिखाई वो रहे। ऐसी शिक्षा धारणा में हो जो शिक्षा हमारी रक्षा करती रहे। भगवान की शिक्षाओं में विश्वास रखने से सदा ही बाबा हमारा रक्षक है। तो शिक्षाओं में रक्षा है।

दिनचर्या प्रमाण सुबह से रात्रि तक एक्यूरेट रहना, चलना, करना यह भी ब्राह्मणों की शान है, इसमें कोई बहाना नहीं देना

(दादी जानकी)

बाबा को हम मीठे बच्चे अच्छे लगते हैं, हमको मीठा बाबा अच्छा लगता है। बाबा मीठा क्यों लगता है? क्या करता है जो मीठा लगता है? हमको तो मीठा बनना ही है। मेरी मुट्ठी में क्या है? विचार करो तो नशा चढ़ेगा। बाबा बताता है तेरी मुट्ठी में क्या है? बाबा ने इतना ज्ञान दिया है। मुरली के आधार से पुरानी दुनिया को पीठ है, ऐसे पीछे मुड़कर देखते भी नहीं हैं। सामने लक्ष्मी-नारायण का लक्ष्य है, मन बाबा में लगा हुआ है, अच्छा लगता है, राइट टाइम पर राइट क्या सोचना है, और कुछ सोचने की जरुरत ही नहीं है। सोचना माना कुछ अन्दर से क्लीयर समझ में नहीं आता है। जिसको क्लीयर समझ में आता है वो सोचता नहीं है।

तो आज बाबा ने कहा ज्ञान का सिमरण करो और स्मृति में रहो। इन दो शब्दों में ही कितनी गुह्यता और रमणीकता है, कोई सोचने की बात नहीं है पर क्लीयर है। सारे ज्ञान का सार है मनमनाभव। स्व-दर्शन चक्र हमको पूरा अहिंसक बनाता है, स्वर्ग में आने लायक बनाता है। सारा चक्र बुद्धि में आता है

कि पूरे 84 जन्मों में कैसे पार्ट बजाया है। सारे चक्र में हमारा वन्डरफुल पार्ट रहा है। बड़े साधू, सन्त, महात्मायें समझते हैं इस दुनिया के चक्र से छूट जायें, मोक्ष को पायें क्योंकि यह सुख काग विष्ठा समान है। यह शब्द ही देखो कैसे हैं? भारत की महिमा तो अपरम्पार है, यहाँ स्वर्ग में कितने सुख वैभव होते हैं। जैसे बाप की महिमा है वैसे भारत की महिमा है। एक तो हम भारतवासी हैं, दूसरा आदि सनातन धर्म की स्थापना परमात्मा बाप द्वारा जो यहाँ हुई है, हो रही है, उसके बीच अधर्म का नाश करने कराने के निमित्त हैं।

यह देवतायें ऊंचे ते ऊंचे हैं, पवित्र हैं, पर वो हम ही थे यह अभी समझ है। तो अभी पहले जैसा घण्टी बजाके पूजा नहीं करेंगे। अभी क्या सोचना है, क्या करना है वो बाबा क्लीयर बता रहा है इसलिए बाबा बड़ा मीठा लगता है। बच्चा है या बूढ़ा है, पढ़ा लिखा है या न पढ़ा हुआ है, पर दोनों अच्छी तरह दिल से बाबा कहते हैं तो कितना अच्छा लगता है। भगवान स्वयं पढ़ाये और हम सामने बैठकर पढ़ाई पढ़ें, सुनें तो इस गुप्त खुशी से आत्मा को ताकत मिलती है और इससे बुद्धि की समझ क्लीयर हो जाती है। बाबा ने ऐसा स्वदर्शन चक्र फिराना सिखाया है, सारे चक्र में कुछ भी पार्ट बजाते यहाँ तक पहुँचे हैं। पर कभी दुनियावी मनुष्यों की तरह दु:खी नहीं हुए होंगे क्योंकि इस समय हम बाबा के बच्चे बनने के बाद कोई ऐसे कर्म नहीं किये हैं, सदा ही अच्छे बच्चे बनके अच्छे कर्म किये हैं। ''मैं'' का ज्ञान बड़ा मीठा है, ऐसे ही मैं नहीं कहते लेकिन अन्दर अपने को देखना है। कोई भी पुराने विचार या दूसरों के विचारों से हम उसी मुआफिक नहीं चलेंगे। जो बाबा की श्रीमत है उसी अनुसार चलेंगे। जो बाबा कहता है उसी पर चलेंगे, बाबा ने टाइमटेबल बनाके दिया है, तो टाइम टू टाइम दिनचर्या प्रमाण सुबह से रात्रि तक एक्यूरेट रहना, चलना, करना यह भी एक ब्राह्मणों की शान है। जैसे याद में भोजन बनायें, वैसे याद में भोजन स्वीकार करें तो यह सब डायरेक्शन हैं। डायरेक्शन को अमल में लाने वाले की नेचुरल जो नेचर है वह सुन्दर बन जाती है क्योंकि यज्ञ के डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाया। फिर ऐसे ही हमें भी अपनी प्रैक्टिकल चलन से दूसरों को सिखाना है। जिनके निमित्त बनेंगे वो भी फिर ऐसे ही करेंगे। तो सबसे पहले हम अगर एक्यूरेट चलना चाहते हैं तो कोई बहाना नहीं है। जो बहाना देता है, बाबा को उससे यह फीलिंग नहीं आयेगी कि यह सच्चा बच्चा, अच्छा बच्चा है। जैसे बाबा सच्चा है, ऐसे बाबा को हम बच्चों से फीलिंग आवे, मेरा बच्चा सच्चा बच्चा है। उस स्कूल में पढ़ाई में कोई इतना होशियार नहीं होता है तो उसको कहते हैं पीछे जाकर बैठो, यहाँ यह नहीं कह सकते हैं। इतना बाबा रहमदिल है, यह कभी नहीं कहेगा कि यह निकम्मा बच्चा है, निश्चय नहीं है जाओ पीछे बैठो। तो बाबा इतना बच्चों से प्यार करता है, तो बच्चे भी बाबा को इतना ही प्यार करते, बाबा के डायरेक्शन को अमल में लायें तो बाबा कितना खुश हो जायेगा!

तो संगमयुग पर परमात्म प्यार की शक्ति मायाजीत, विकर्माजीत, कर्मातीत बनने में साथ दे रही है, मैं तो यह अनुभव कर रही है। कभी कोई प्रकार से भी माया चूहे के मुआफिक अन्दर घुस जावे, आ नहीं सकती है क्योंकि बहुतकाल से आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बनने का सुख मिला है। बहाना बनाना माया है। अपने इच्छा के वश है इसलिए बहाना देता है कि मुझे यह काम है। तो जैसे वो अज्ञानी आत्मायें हैं, काम महाशत्रु है, वैसे काम के बहाने से अपनी पढ़ाई के आधार से आज्ञाकारी बनना वो मिस कर रहे हैं।

हम कहाँ रहते हैं! भगवान के दिल में, भगवान कहाँ रहते हैं? हमारे दिल में... अब इस तरह से अपना चार्ट देखने में खास टाइम की जरुरत नहीं है, पर जहाँ मैं रहती हूँ, जहाँ मेरी बुद्धि है, जहाँ से मिलता है वो बात दिल में होती है। अगर मेरे को कोई भी प्रकार का बाहर का मान शान पैसा कुछ भी मिलता है तो भी मैं बाबा के दिल में ही रहूँ, बाबा मेरे दिल में रहे। नहीं तो संगम पर आत्मा और परमात्मा की यह जो प्राप्ति है वो मिस होती है। तो बाबा की याद में रह करके इस शरीर में आत्मा को बाबा चला रहा है। जिस तरह से बाबा ने चलाया है, ऐसे चलने का जो हमारा पुरुषार्थ प्रैक्टिकल है, वो मैं आपके आगे शेयर करने लिए रोज़ क्लास में खींचकर आ जाती हूँ।

जो बाबा से पाया है, जो यज्ञ से सीखा है वो औरों को सिखाने का, संग देने का भाग्य मिलता है। तो इन बातों को न समझ कई हैं जो अपनी बातों को सिद्ध करने के लिए कहते हैं, जो मैं कहता हूँ करता हूँ, राइट करता हूँ। तो यह भी एक अभिमान की निशानी है। इस देह-अभिमान को छोड़ देही-अभिमानी बन किसी प्रकार की न मेरे को किसी से कोई फीलिंग आये, न मैं किसी से कुछ फील करूँ। गलती कोई भी करे हम बुद्धि में रखें तो नुकसान किसको होगा? मित्रता भाव से सच्चाई और प्रेम भाव से, एक दो को आगे बढ़ाने के भाव से यह ईर्ष्या नहीं है, पर भले यह आगे बढ़े, यह शान है हमारे यज्ञ का। तो एक दो की बात को प्यार से स्वीकार करना भी सदा सुखदाई बनना है। इसी भावना और भरोसे के बल से ही हमारी लाइफ हो तो बाबा का नाम बाला करते रहेंगे। ओम् शान्ति।

बाबा को सदा अपने दिल में बिठा लो तो कर्म करते कर्मयोगी बन जायेंगे

(गुल्जार दादी)

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति शब्द कितना मीठा है। आप सबका भाग्य देख करके हम बहुत खुश हो रहे थे कि देखो, किन आत्माओं का भाग्य है! कितने विद्वान, आचार्य वगैरा उन्हों का भाग्य नहीं है लेकिन माताओं का, भाइयों का, कुमारों का कितना बड़ा भाग्य है। इतना बड़ा भाग्य जो आपको ही बाबा ने चुना। नशा रहता है ना! आपके साथ कितने रहते होंगे लेकिन उनमें से आपको क्यों ढूँढ़ा! और आपने भी बाबा को ढूँढ़ लिया। तो भाग्य और भगवान, सदा अपने इस भाग्य को भूलना नहीं। चाहे पुराने हो गये हैं, अपनी लाइफ एकदम उसी रीति से चल रही है, जैसे चलती है लेकिन बाबा को दिल में समाया हुआ है। अभी दिल में जब बाबा को समा दिया तो कहाँ जायेगा! जा ही नहीं सकता है। बाबा का प्यार एक एक बच्चे से है। ऐसे नहीं बाबा के लिए तो बहुत है ना! नहीं। हम ही हैं बाबा के लिये, इतना नशा है ना। चलो साधारण हैं लेकिन बाबा के लिये साधारण नहीं हैं। बाबा के लिये एक एक बाबा का बच्चा महान है।

और हमें भी आप सब भाई बहनों का भाग्य देख दिल में यही आ रहा है वाह! आप सबका भाग्य वाह! और हमें ही बाबा ने ढूँढ़ा, कितना नशा है! चाहे हम क्या भी कर रहे हैं लेकिन हैं किसके? चलो झाड़ू लगाते हैं, झाड़ू लगाने वाला भी किसका है? भगवान का बच्चा है। साधारण काम करते भी नशा तो रहता है ना! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा भाग्य! तो हमेशा और कुछ भी नहीं याद आवे ना, यह नहीं भूलना वाह बाबा! वाह मेरा भाग्य! अपना भाग्य देख करके बाबा ने कहाँ से आके चुना। देखो, कोई कहाँ रहता था, कोई कहाँ रहता था .... लेकिन बाबा ने अपने बच्चों को ढूंढ लिया। तो भगवान ने हमको ढूँढा, हमारे पड़ोसियों को नहीं ढूँढ़ा, बाबा को हम ही पसंद आये। तो जरुर कोई भाग्य है ना। बहुत बड़ा भाग्य है।

और सिखाया क्या! बाबा कहते हैं योग सीख लो, बस। अगर योगी आत्मा है तो सब प्राप्तियां हैं क्योंकि पहले है अतीन्द्रिय सुख, बाबा से मिलके क्या मिला? अतीन्द्रिय सुख। और एक जन्म के लिये नहीं, आगे भी मिलेगा, गैरंटी है। तो वाह मेरा भाग्य! यह गीत तो सबके अन्दर चलता ही है ना। परमात्मा ही मेरा हो गया और क्या चाहिए? हम बाबा को कैसे याद करते हैं, मेरा बाबा हरेक यही कहता है। यह नहीं कहता है तेरा बाबा, नहीं मेरा बाबा। तो मेरे के ऊपर कितना नाज़ होता है। और खुशी कितनी होती है, लोग अभी तक ढूँढ रहे हैं और हम क्या कहेंगे पा लिया, मिल गया। है ना इतनी खुशी! कभी नहीं भूलना वाह मेरा भाग्य! वाह भगवान वाह!

अभी बाबा मिला, यह तो लक हुआ, यह तो निश्चित हो गया ना, हिल सकता है क्या! नहीं। संकल्प में भी नहीं। चलो कोई भी बात हुई, बात बात से होगी ना, भगवान बाबा क्यों भूले। संगठन है, संगठन में तो बातें होंगी। दो बर्तन भी मिलते हैं तो भी एक दो में लगते हैं। तो इतना बड़ा संगठन है बातें तो होंगी थोड़ी बहुत लेकिन हमारे लिये बातें नहीं। हमारे लिये भाग्य है। अपने भाग्य को सदा याद रखो। वाह मेरा भाग्य! कितने आराम से रहे पड़े हैं। हमें तो स्थापना का याद आ रहा था, बाबा ने मुख्य क्या सिखाया? योगी बनो। योग के प्रति बाबा खुद भी ड्रिल कराता, भले साकार में नहीं है लेकिन आप योग लगाते हो किससे? बाबा से ना। और बाबा भी रेसपांड कितना अच्छा देता है। जो चाहे लो, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम जो चाहिए लो, सब दे रहा है क्योंकि बच्चे हैं ना, बच्चे तो मिलकियत के मालिक होते हैं ना। तो खुशी रहती है कि कामकाज़ करते, काम कर रहे हैं, भण्डारे में रोटी बना रहे हैं, सफाई कर रहे हैं। अरे, यह तो कुछ भी नहीं है, अगर खाली रहेंगे तो बीमार हो जायेंगे इसलिए शरीर को भी कुछ चाहिए। लेकिन हमारा भाग्य जो बाबा को मैं ही पसंद आ गया। हरेक क्या समझता है! मैं बाबा को पसंद आया तभी तो यहाँ बैठे हो। कितना नशा है? बाबा को पसंद मैं आ गया। मेरे मोहल्ले में कितने होंगे, कुमार कितने होंगे लेकिन बाबा की नज़र मेरे ऊपर ही पड़ी। लक है ना!

अभी बाबा का विशेष योग के ऊपर बहुत अटेन्शन है। तो हरेक अपने से पूछे कि सचमुच मेरी जीवन क्या है, योगी जीवन है, जीवन ही योगी है। कर्म करते कर्मयोगी हैं। तो योग का बहुत इन्ट्रेस्ट चाहिए क्योंकि कर्मयोग भी तो बाबा ने सिखाया। हम कहेंगे हम तो बहुत बिजी रहते हैं, सारा दिन काम ही

इतना है, काम में ही बिजी रहते हैं। लेकिन बाबा ने कर्मयोग सिखाया है, कोई ऐसा नहीं कहे क्या करें, बहुत बिजी हैं, इसलिए कर्मयोग हमारा मशहूर है। तो योग के ऊपर अटेन्शन है? हम कहेंगे क्या करेंगे सारा दिन काम में लगे हुए हैं, अरे, कर्मयोगी हैं। कर्म भले करो लेकिन कर्मयोगी हैं। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं हैं, कर्मयोगी हैं। नहीं तो सारा दिन क्या है! शान्त शान्त, चुप चुप रहके क्या करेंगे। यज्ञ सेवा उसका भी तो पुण्य है ना बहुत, बहुत पुण्य कमा रहे हैं। तो योग के ऊपर सबका अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि ब्रह्माबाबा को देखो, शिवबाबा की प्रवेशता हुई योग शुरू हो गया। चलते-फिरते बाबा दृष्टि देता था, उससे लगता था कि योग में है। योग की आकर्षण आती थी। ऐसे हम भी कर्म करें, चलो सफाई कर रहे हैं, भले हाथ में सफाई का कपड़ा है लेकिन बुद्धि कहाँ है? बाबा में। यह चेकिंग चाहिए, भले कामकाज में रहें वो तो करना है, नहीं तो खाली बैठके और बुद्धि इधर उधर जायेगी, काम में फिर भी बिजी तो हैं। यज्ञ सेवा तो है लेकिन कर्मयोगी हैं। हम सिर्फ कर्म नहीं करते हैं।

तो सभी खुश? बहुत खुश कि थोड़ा थोड़ा खुश हैं? बाबा के बन गये ना, पक्का कि थोड़ा-थोड़ा रहा हुआ है? बुद्धि कहाँ भी नहीं जानी चाहिए। कितना सहजयोग बाबा ने सिखाया है, कोई हठ क्रिया थोड़ेही सिखाई है। योग माना याद, याद तो कोई-न-कोई होती ही है। सारे दिन में आपकी बुद्धि में कोई भी याद नहीं हो, यह होगा नहीं। तो योग माना याद। तो याद का महत्व बाबा ने सुना दिया है, भले काम जो भी करो लेकिन याद बाबा को करो। आत्मा हूँ परमात्मा का बच्चा हूँ, यह नहीं भूले, मैं कौन हूँ? तो सदा खुश कि थोड़ा-थोड़ा बीच में ऐसे ऐसे होता है? नहीं। अभी तो पुराने हो गये ना! अभी तो समझ गये ना, क्या करना है, क्या नहीं। तो बाबा को क्या सुनायें? यह स्थान सेवा का फाउण्डेशन है। तो बाबा को सुनाऊं कि बाबा आपके स्थान पर रहने वाले सभी कर्मयोगी हैं। कर्मयोगी हो या कर्म कर्ता? कर्मयोगी। पक्का। अगर माया आ गयी तो... माया का काम है आना, हमारा काम है भगाना। हमारे पास आने में उसको भी खुशी होती है। अच्छा आ गई, उसको भगाओ और क्या? अभी यहाँ कोई पंछी आदि आ जायेगा तो हम क्या करेंगे? यही सोचते रहेंगे क्यों आया? क्यों आया? कि उसको भगायेंगे? अगर कोई ऐसी बातें आ भी जाती हैं जो काम की नहीं हैं, यह पेपर होते हैं, पेपर तो आयेंगे ना! बिना पेपर के पास होंगे क्या! जो होशियार होते हैं वो कहते हैं पेपर आवे, जल्दी जल्दी पुरा हो और जो सुस्त होगा वो कहेगा अभी 15 दिन और मिल जायें तो बहुत अच्छा है। तो ऐसे तो नहीं है ना।

अरे, भगवान मेरा हो गया, कम बात है क्या? भगवान क्या कहता है, मेरा बच्चा मेरा बच्चा, हम भी कहते हैं मेरा बाबा, मेरा बाबा। कम भाग्य है क्या! अभी योग के ऊपर अटेन्शन। भले कर्म कर रहे हैं लेकिन बाबा क्यों भूलें! बाबा से सम्बन्ध है तो बाबा की याद क्यों भूलें! और सर्व सम्बन्ध हैं, एक सम्बन्ध भी नहीं, तो बाबा कहते हैं बस योगी जीवन में चलते चलो। कोई भी बात आवे, योग की शक्ति के आगे ठहर नहीं सकती है।

दिल में बाबा को बिठा दिया है बस। दिल में बाबा और बाबा की बातें ही बातें भरी हुई है ना, तो कैसे दूसरी बातें आयेंगी। हमने बाबा को अपने दिल में बिठाया है, बाबा ने हमको अपने दिल में बिठाया है। है बाबा दिल में? और कुछ तो नहीं है? देखना। और कुछ भी आ गया तो क्या होगा? अभी तो बाबा कहते हैं कि योगी जीवन के अनुभव में रहो। कुछ भी कर रहे हो, योग नहीं छूटे। अभी तो अनुभवी बन गये हैं ना। वाह हमारी जीवन! खुशी कितनी होती है! यानि भगवान हमको कैसे सहज मिल गया। यह सोचा था कभी! हमारा इतना भाग्य हो सकता है! भगवान हमारा हो गया, हमारे दिल में बैठ गया।

हम मायापति हो गये, माया क्या है उसको समझ लिया है। भले आवे, वह अपना खेल दिखाती है, दिखाये, हम बाबा को क्यों भूलें। तो सभी बाबा के दिल में रहने वाले और अपने दिल में बाबा को बिठाया है। दिल में और बातें आती हैं माना बाबा को दिल में नहीं बिठाया है। दिल खाली है ही नहीं, बाबा बैठा है तो और बातें आ ही नहीं सकती है।

एक बार बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं हमको कोई साथी नहीं है, अकेले हैं। बाबा ने कहा मैं दिल में बैठा हूँ वो भूल गई और कहती हो मै अकेली हूँ। दिल में बाबा को नहीं बिठाया है? अकेली नहीं हो, बाबा ने कहा कभी नहीं समझो मैं अकेली हूँ। अरे, दिल में बाबा बैठा है। कुछ भी हो, बाबा यह करूँ, बाबा यह होता है, बस बाबा से ही बातें करते रहें इसलिए दिल में बिठाया है। उनसे ही बैठूँ, उनसे ही खाऊं, उनसे ही सब कुछ करूँ। भले एक बाबा है लेकिन कमाल तो बाबा की है, सबको इतना ही अपनेपन का अनुभव कराता है।

तो हरेक समझते हैं मेरा बाबा है! योग के ऊपर अटेन्शन है! जो समझते हैं मेरा कर्म करते भी योग के ऊपर अटेन्शन है वो हाथ उठाओ। पक्का कि भूल जाते हो फिर याद करते हो, नहीं। भूले ही नहीं। हमारी जीवन ही योगी है। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

माया से निर्भय रहो तो विजयी बन जायेंगे

1) भाग्य विधाता, वरदाता बाप ने हम सभी बच्चों को अनेक वरदान दिये हैं। परन्तु उसमें पहला वरदान दिया कि तुम सभी शिववंशी हो। एक शिवबाबा के वंश के हो। जिससे पहला-पहला नाता जोड़ा कि हम सब भाई-भाई हैं। दूसरा नाता जोड़ा कि हम ब्रह्मा की औलाद ब्रह्माकुमार कुमारी हैं। ब्राह्मण कुल के हैं। ऊंच धर्म के, ऊंच कुल के, ऊंच चोटी हैं। तो पहले हम संगम के इस वरदान पर खड़े रहते। भविष्य में तो ऊंच पद पाने का लक्ष्य है ही परन्तु अपने आपको पहले इस स्थिति पर रोज़ देखो कि हम शिव वंशी हैं।

2) बाबा आया है हम बच्चों को गुप्त दान देने। सबसे पहले उसने हमें अपने समान बनाया फिर अपना राज्य भाग्य दिया। तो पहले खुद से हरेक पूछे कि बरोबर मुझे ये नशा है कि हम खुदा के बच्चे हैं। सिर्फ बच्चे हैं, नहीं। परन्तु हमें खुदा ने अपना बनाया है, रौरव नर्क में पड़े हुए को अपनी गोदी में बिठाया है। हम इस समय प्यारे बापदादा की गोदी में खेल रहे हैं, पल रहे हैं। हमें उनका लालन-पालन मिल रहा है। फिर वही हमें सारे विश्व की नॉलेज देते, हिस्ट्री सुनाते, सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान दे आप समान नॉलेजफुल बनाते। बाबा ने हमें इन्जीनियर्स का इंजीनियर, डॉक्टर्स का डॉक्टर, प्रोफेसर्स का प्रोफेसर सिर्फ एक अल्फ पढ़ाकर बना दिया इसीलिए हमारी बुद्धि में कभी नहीं आता कि फलाना इतना पढ़ा लिखा है, यह तो जज़ है। नहीं, हमें तो बाबा ने जजों का जज बनाया है। वह क्या सत्-असत् की तुलना करेंगे! हमें सत-असत की पूरी पहचान मिली है। वह डाक्टर्स थोड़े समय के लिए दवा देंगे, हमें तो बाबा ने ऐसी दवाई दे दी जो 21 जन्म के लिए हम निरोगी बन जाते हैं। हम ऐसे सर्जन के बच्चे मास्टर सर्जन हैं जो किसी के भी मन का रोग मिटा सकते हैं। मन से तन भी ठीक हो जाता है।

3) हरेक अपने से पूछो - हमसे ऊंचा दुनिया में और कोई है? कोई महान है या हम सबसे ऊंचे से ऊंच हैं? हम सबसे बड़े ते बड़े योगी हैं, हम सबसे पवित्र हैं, हम जैसा कोई पवित्र नहीं है। हम ऊंचे ते ऊंचे सतगुरु की श्रीमत पर चलने वाले हैं। वह तो न बाप को फॉलो कर सकते, न टीचर को, न गुरु को। हमें तो तीन इंजन मिली हैं। हमारी गाड़ी तीन इंजन से चल रही है। परम बाप, परम शिक्षक और परम सतगुरु के हम तकदीरवान बच्चे हैं। जब हम अपनी इतनी महान तकदीर रोज़ देखते तो अन्दर से निकलता वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! जो मेरा भाग्य बना वह औरों का भी बनें।

4) हम तो ऊंची चोटी पर बैठे हुए ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण हैं। फिर ब्राह्मण कैसे कहेंगे यह माया आती, यह होता! जैसे कोई छोटी चीज़ का भय बैठ जाता, रस्सी को भी सांप समझ भयभीत हो जाते, वैसे माया है... यह भी भय के भूत का बड़ा सांप दिमाग में रख दिया है। अब सांप तो है ही सांप। वह तो है ही विषैला। वह तो ज़हर ही फूंकेगा। सांप से खेलो नहीं, उससे डरते क्यों हो, वह कोई खिलौना नहीं है। सांप है तो किनारा कर लो। 5 विकार भूत हैं लेकिन वह हैं ही भूत, है ही गन्दी चीज़। गन्दी चीज़ को देखेंगे, दृष्टि डालेंगे या उससे किनारा करके चले जायेंगे! उनके पास जायेंगे तो जरूर बदबू आयेगी। किनारे हो जाओ तो बदबू से बच जायेंगे। यह है ही छी-छी दुनिया। मैं अगर शौक से पिक्चर देखूंगी तो वह मुझे जरूर खींचेगी। मैने देखा तो वह जरूर आकर्षित करेगी। मैने अटेन्शन दिया तो उसने खींचा। अगर हम कहें यह तो डर्टी है, तो वह खींच नहीं सकती। जरा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच जरूर होगी।

5) अगर मैं परचिन्तन करूंगी तो दूसरा सुनेगा। बाबा ने कहा बच्चे, इस असार संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। यह बड़ी सुन्दर है, यह अच्छी लगती। यह चीज अच्छी है, ऐसे सोचा तो खत्म। बाबा की गोदी छोड़कर उतरते क्यों हो! गोदी में सदैव बैठे रहो, उनकी छत्रछाया के नीचे रहो तो कोई की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। माया आती है इसका कारण तुम उसे देखते हो। बाबा की गोदी छोड़ते हो। भय का भूत बैठा हुआ है। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

6) निर्भय माना कोई भी विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके। माया हरा नहीं सकती। मैं तो महावीर-महावीरनी हूँ। दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं जो मुझे भयभीत करे या मुझे अपनी अंगुरी दिखाये। आप चैलेन्ज करो कि कोई ऐसी ताकत नहीं जो मुझे हरा सके। यह कहने की बात नहीं लेकिन अन्दर में दृढ़ता हो, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान् बनकर रहो।

7) अन्दर में थोड़ा भी आलस्य आया तो पूरा ही खा जायेगा। आज थोड़ा आलस्य आयेगा, कहेंगे चलो क्लास में लेट जाते, क्या फ़र्क पड़ेगा! धीरे-धीरे माया पूरा ही खा लेती। सर्विस की फील्ड में भी आलस्य के बस अनेक बहाने बनाते। दिल सच्ची नहीं तो अनेक कारण निकलते। दिल सच्ची हो तो कोई भी कारण नहीं।

8) बाबा ने कहा बच्चे अपने संकल्पों को स्टॉप करने की प्रैक्टिस करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो, इसके लिए नियम बनाओ। ड्रिल करो, अटेन्शन रखकर प्रैक्टिस करो तो बुद्धि शीतल और शक्तिशाली बन जायेगी। खुशी में रहेंगे। अच्छा।